LOK SABHA

Monday, December 7, 1964/ Agrahayana 16, 1886 (Saka).

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

केन्द्रीय कार्यक्रम परामर्शदात्री समिति

+

*376. **श्री प्रकाशवीर शास्त्री :**
श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती :

क्या सूचना और प्रसारण मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या आकाशवाणी की केन्द्रीय कार्यक्रम परामर्शदात्री समिति का फिर से गठन किया गया है ;

(ख) क्या इस समिति ने कार्यक्रम के बारे में कुछ नये सुझाव दिये हैं ; और

(ग) यदि हां, तो वह क्या हैं तथा उन पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

The Deputy Minister in the Ministry of Information and Broadcasting (Shri C. R. Pattabhi Raman): (a) No, Sir.

(b) Yes, Sir.

(c) The new suggestions made by the Committee were mainly the following:

(i) All India Radio should set up a permanent team of trained commentators.

(ii) The scope of the Vividh Bharati programmes should be broadened so as to include a large number of spoken-word items.

These and many other suggestions made by the Committee are receiving consideration.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : आकाशवाणी के कार्यक्रम सुनने वाले अधिकांश स्रोता भारतीय भाषाओं के जानने वाले हैं, लेकिन परामर्शदात्री समिति की सूची देखने से प्रतीत होता है कि उसमें अंग्रेजी में परामर्श देने वाले सदस्यों की भरमार है । मैं जानना चाहता हूं कि ऐसा निर्णय क्यों लिया गया ।

सूचना और प्रसारण मन्त्री (श्रीमती इंदिरा गांधी) : यह कमेटी जो है वह तो असल में किस प्रकार कोई चीज प्रसारित होगी इस पर अपनी राय देती है । लेकिन मेरा ख्याल है कि इसमें कई लोग ऐसे भी हैं जो हिन्दी जानने वाले हैं ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : मैंने केवल हिन्दी के लिये नहीं पूछा है, मैंने भारतीय भाषाओं के बारे में पूछा है ।

श्रीमती इंदिरा गांधी : भारतीय भाषाओं के वास्ते भी कई लोग हैं ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : अब से पहले जो आकाशवाणी की परामर्शदात्री समिति थी उसमें कुछ ऊंचे किस्म के साहित्यिक, जैसे कि मामा वरेरकर, नवीन जी और मैथिली शरण जी थे । इस बार जिस समिति का गठन किया गया है, उसमें इस प्रकार के लोग नहीं रक्खे गये हैं । मैं जानना चाहता हूं कि इसमें उस प्रकार के ऊंचे साहित्यिकों को क्यों नहीं रक्खा गया है ।

श्रीमती इंदिरा गांधी : कोई जान कर ऐसा नहीं किया गया । केवल कोशिश यह थी कि चूंकि कई लोग बहुत दिनों से उसमें थे इस

लिये कुछ नये लोगों को उसमें लेने का प्रयत्न किया जाये ।

श्री म० ला० द्विवेदी : जो समिति गठित की गई है, उसमें जो भारतीय भाषाओं के लोग रक्खे भी गये हैं वे प्रतिष्ठित किस्म के नहीं हैं । हमारा रेडियो जो है वह भारतीय भाषाओं के कार्यक्रमों को अधिक से अधिक प्रसारण करता है और अंग्रेजी के कार्यक्रमों का बहुत कम । जो लोग परामर्शदात्री समिति में रक्खे गये हैं वे चूंकि भारतीय भाषाओं के सम्बन्ध में बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति नहीं हैं, इसलिये मैं जानना चाहता था कि ऐसा क्यों किया गया ।

श्रीमती इंदिरा गांधी : एक तो भाषा का प्रश्न होता है और दूसरा प्रश्न होता है कि कोई भी कार्यक्रम जो बना है, चाहे वह किसी भी भाषा में हो, वह किस तरह से जनता के सामने रक्खा जाये जिसमें अधिक से अधिक लोग उस कार्यक्रम को सुनें । कमेटी के लोगों को चुनने का हमारा दृष्टिकोण यह था ।

Shri Kapur Singh: I want to know whether this Advisory Committee has any elements who have sympathetic understanding of the special requirements of suppressed languages such as Punjabi, Urdu and Sindhi?

Shrimati Indira Gandhi: I do not think that we have really constituted this Committee language-wise because, as I said earlier, the language is checked by many language knowing people. The purpose of this Committee is only to decide on the nature of the programmes and to see how they should be planned. They are not language experts as such.

Shri Kapur Singh: Sir, I did not ask whether the Committee has been constituted language-wise. I only want to know whether its personnel have a special understanding of the particular requirements of certain suppressed languages.

Mr. Speaker: The answer to that she gave.

Shri Indrajit Gupta: Sir, am I to take it that the authority of this Committee to decide on what the nature of the programmes will be also extends to the question of advising the Government as to whether commercial programmes should be introduced or not? Does that also come within this Committee's purview?

Shrimati Indira Gandhi: That perhaps has come before the Reviewing Committee. This Committee can give any advice; it acts as an advisory committee on any subject.

Shri Oza: May I know whether any attempt has been made by the Government to assess the extent to which Vividh Bharati has been able to attract the people away from Radio Ceylon?

Shrimati Indira Gandhi: I think we have attracted a large number of listeners, but we are making an attempt to increase the listening public.

श्री भागवत झा आजाद : एक तरफ तो हमारे यहां अच्छे कमेंटेटर्स का अभाव है और जिन के बारे में केन्द्रीय परामशदात्री समिति ने अपना सुझाव दिया है कि नये कमेंटेटर्स को बहाल किया जाये, ऐसी स्थिति में जब तक नये कमेंटेटर्स को सरकार बहाल न कर दे तब तक अच्छे से अच्छे कमेंटेटर्स को, जैसे की महाराजकुमार विजयानगरम हैं, जिन को डायन आफ कमेंटेटर्स कहा जाता है, की सेवा से बम्बई और कलकत्ता टैस्ट में क्यों मुक्त कर दिया गया ।

अध्यक्ष महोदय : इस प्रश्न से इस की कोई रेलेवेंसी नहीं होगी ।

श्री भागवत झा आजाद : पहली रिकमेन्डेशन इस समिति की है कि कमेंटेटर्स रक्खे जायें । मैं जानना चाहता हूं कि जब तक नये कमेंटेटर्स न रख लिये जायें . . .

अध्यक्ष महोदय : यह बड़ा जरूरी सवाल है, लेकिन इसमें नहीं आ सकता ।

श्री भागवत झा आजाद : मैं जरूरी नहीं कहता लेकिन मन्त्री जी ने अपने जवाब में कहा कि इस समिति का सुझाव है कि नये कमेंटेटर्स

की टीम बनाई जाये । मैं जानना चाहता हूं कि जब तक नये कमेंटेटर्स की टीम नहीं बना ली जाती है तब तक जो पुराने कमेंटेटर्स थे, जैसे कि विजयानगरम हैं जिन को कि डायन ग्राफ कमेंटेटर्स कहा जाता है, उनको अलग क्यों कर दिया गया ।

श्रीमती इंदिरा गांधी : उनको हटाया नहीं गया है ।

श्री यु० सि० चौधरी : सरकार ने बतलाया कि कुछ सुझाव परामर्शदात्री समिति की तरफ से ग्राकाशवाणी के कार्यक्रमों की सुन्दरता के बारे में ग्राये हैं । मैं जानना चाहता हूं कि जो भी निर्णय लिये गये हैं वे बन्द कमरों में बैठकर लिये गये हैं या विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करके ग्रौर लोगों की राय जान कर लिये गये हैं ।

श्रीमती इंदिरा गांधी : बाहर के विचार भी लिये गये हैं । मैं यह तो नहीं कह सकती कि हर एक व्यक्ति ने ऐसे दौरे किये हैं या नहीं, लेकिन कुछ लोगों ने किये हैं ग्रौर लोगों से राय लेकर रिपोर्ट बनी है ।

भारतीय बन्दियों की रिहाई

+

*377. { **श्री विभूति मिश्र** :
श्री क० ना० तिवारी :

क्या **प्रतिरक्षा** मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या 1962 में चीनी हमले के समय चीनियों द्वारा गिरफ्तार किए गए भारतीय सैनिकों को उन्होंने इस बीच रिहा कर दिया है ; ग्रौर

(ख) यदि हां, तो उनकी संख्या क्या है ?

The Deputy Minister in the Ministry of Defence (Dr. D. S. Raju): (a) Yes, Sir.

(b) The total number of Indian Defence personnel including civilians from GREF etc. released by the Chinese is 3942.

श्री विभूति मिश्र : मैं जानना चाहता हूं कि ग्रभी चीनियों के हाथों में हमारे कितने वीर सैनिक हैं ।

The Minister of Defence (Shri Y. B. Chavan): According to our information, there are no prisoners in their hands now.

श्री विभूति मिश्र : मैं जानना चाहता हूं कि चीनी हमले के समय हमारे कितने वीर सैनिक मारे गये ।

Shri Y. B. Chavan: I have not got the details with me but I can certainly give some general figures because I thought this information,—

Mr. Speaker: But it is not relevant here.

श्री क० ना० तिवारी : हमारे कितने सैनिक पकड़े गये थे ग्रौर उनमें से कितने मारे गये । ग्रौर जो फिगर्स दिये गये थे कि इतने सैनिक रिलीज होंगे, उनमें से कितने रिलीज हुए ग्रौर कितने रह गये ।

ग्रध्यक्ष महोदय : ग्रौर ग्राप कितने सवाल करेंगे ।

Shri Y. B. Chavan: According to the information available, 3,968 of our men were taken prisoner by the Chinese. Of these, 26 died in captivity. The Chinese returned all the prisoners including 22 dead bodies and the ashes of four deceased prisoners.

Shri Hem Barua: It appears from the prisoners of war returned by China that serious attempts were made by the Chinese to brainwash as many people as possible and if so, may I know whether Government have tried to evaluate the depth and